महात्मा-गाँधी-केन्द्रीय-विश्वविद्यालयः
संस्कृतविभागः
M.A.& M.Phil./Ph.D. (Core Paper) in Sanskrit

पाठ्यशीर्षकम् – पाण्डुलिपिविज्ञानं-समीक्षात्मकग्रन्थसम्पादनञ्च

(Manuscriptology & Critical Text-editing)

पाठ्यकूटसङ्केतः – SNKT2005&SNKT5002

विषयः पाण्डुलिपिशास्त्रे लिपिपरिचयः

Topic-(Introduction to scripts in manuscriptology)

अध्यापकः – डा. अनिलप्रतापगिरिः

Differences between language and script

- Language is knowledge.
- Language cuts a form in the ocean of reality.
- Language is like a lamp.
- Language is God. Language has created the world .Without language no activity can be imagined.
- Without language entire world would be in the dark. Everything will be dull and boring.
- Language related to speaking.

Language is a sign system

- Sign is substitute. Substitute is always used in the place of something.
- Script is related to writing.
- The script is encoded cognition.
- Decoding of the script is language
- One script can use for many languages as Devanagari is a script used for Sanskrit language, Hindi language, Marathi language and Nepali Language. Roman is script used for many European languages.
- One script can be used for one language also, like Tamil is a script used for Tamil language, Malayalam is a script used for Malayalam language. Telugu is a script used for Telugu language Kannada is a script used for Kannada language and so on.

Sign system of language originated the scripts

- Script is based on language because language is the science system.
- There are three sign systems.
- Ikon, index, symbol.
- Ikon is based on similarity, index is based on casual relationship between sign and object, remaining all signs are symbol.
- Symbols are totally abstract and arbitrary.

Origin of major scripts

1. Pictograph,चित्रलिपि was originated from ikon. Chinese language is pictography came from sign of ikon. Chinese script is written from top to bottom.

2.Ideograph(भावलिपि) is originated from sign of index. The symbolic logic is written from the sign of index.

3. Phonetic script (ध्वनि लिपि) is originated from sign of symbol. Symbol can be divided into two:

1. Syllabic form as Devanagari

2. Alphabetic form as Roman

Indian scripts originated from Brahmhi script

- Brahmi script written from left to right E.g. Ashokan inscriptions dating from third century BC.
- ब्राह्मी लिपि को समस्त परिष्कृत लिपियों की जननी माना जाता है
- 1795 A.D. सर चार्ल्स मैलेट ने एलोरा की गुफाओं के ब्राह्मी लिपि में लिखित लेखों को पढ़वाने का प्रयास किया परन्तु 1833 में जेम्स प्रिंसेप को ब्राह्मी लिपि पढ़ने में सफलता प्राप्त हुई।
- सम्राट अशोक के कुछ शिलालेखों को छोड़कर प्रायः समस्त शिलालेख ब्राह्मी लिपि में ही हैं।
- ब्राह्मी लिपि को भी दो भागों में बाँटा जा सकता है।
- दक्षिणीब्राह्मी एवं उत्तरी ब्राह्मी

1.दक्षिणी ब्राह्मी लिपि

- दक्षिणी ब्राह्मी लिपि दक्षिण भारत के दक्कन आदि क्षेत्रों में प्राप्त हुई।
- दक्षिणी ब्राह्मी लिपि के दो उपविभाग हैं।
- 1.दक्कन दक्षिणी ब्राह्मी लिपि एवं 2. द्राविड दक्षिणी ब्राह्मी लिपि
- दक्कन दक्षिणी ब्राह्मी लिपि तो आंध्रालिपि के नाम से भी जाना जाता है। यह लिपि दक्कन एवं आँध्र प्रदेश के क्षेत्रों में 200BC से 100AD के मध्य बहुलता से प्राप्त हुई।
- पानघाट, नासिक, पितालखोरा की गुफाओं के शिलालेख आंध्रालिपि में हैं।
- सातवाहन एवं पल्लव राजाओं के द्वारा इस लिपि के प्रयोग का साक्ष्य प्राप्त होता है।

2. द्राविड दक्षिणी ब्राह्मीलिपि

- द्राविड दक्षिणी ब्राह्मी लिपि के दो भेद प्राप्त होते हैं।
- १.उत्तरी द्राविड दक्षिणी ब्राह्मीलिपि जिसे कलिंग लिपि भी कहते हैं।
- २ .दक्षिणी द्राविड दक्षिणी ब्राह्मीलिपि इसमें केरल राज्य में स्थित वायनाड ज़िले के इदक्कल शिलालेख मिलते हैं।
- तमिल लिपि, ग्रंथलिपि इसी दक्षिणीद्राविड दक्षिणी ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न माने जाते हैं।
- दक्षिणीद्राविड दक्षिणी ब्राह्मीलिपि के प्रयोग का समय 300BC - 100AD के मध्य माना जाता है।

2. उत्तरी ब्राह्मी लिपि

- उत्तरी ब्राह्मी लिपि दक्कन के उत्तरी भाग में प्रचलित थी।
- इस लिपि का समय अशोक से प्रारंभ होकर मौर्यवंश एवं गुप्त वंश तक दिखाई देता है।
- उत्तरी ब्राह्मी लिपि से शारदा, गुप्त, नागरी, देवनागरी जैसी इत्यादि लिपियों का उद्भव हुआ।

खरोष्ठी लिपि

- खरोष्ठी लिपि का प्रचलन ईसापूर्व तीसरी चौथी शदी में पश्चिमोत्तर भारत में था।
- सम्राट अशोक के शहबाज़गढ़ी तथा मानसेहरा अभिलेखों में तथा अनेक शकक्षत्रपों तथा कुषाणवंशी राजाओं की मुद्राओं में भी खरोष्ठी लिपि में लेख के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
- खरोष्ठी लिपि आर्येतर परिवार की लिपि है।वस्तुतः यह सेमेटिकपरिवार से सम्बद्ध आर्मेइक लिपि की उपज है।
- यह लिपि फारसी लिपि की तरह दाएँ से बाएँ की तरफ़ लिखी जाती है।
- भारत में खरोष्ठी लिपि के शिलालेखों में प्रयुक्त भाषा ब्राह्मी की ही तरह प्राकृत है । वस्तुतः खरोष्ठी लिपि में लिखे लेख पाली भाषा के हैं।

देवनागरी लिपि

- देवनागरी अथवा नागरी लिपि के स्वरूप के विकासक्रम को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।
- गुप्त लिपि (गुप्तकाल, ईसापूर्व 500 से 350 ई. तक।
- कुटिल लिपि छठी से 10वीं शताब्दी ई. तक।
- देवनागरी लिपि 10वीं शताब्दी ई. के पश्चात।

गुप्त लिपि

- सम्राट अशोक के प्रायः मैदानी क्षेत्रों में लिखे गए लेख इसी गुप्त लिपि में हैं।
- इस गुप्त लिपि कों बालबोध लिपि भी कहते हैं।
- इस लिपि का समय गुप्त काल के राजवंश का समय माना जाता है।
- इसका समय ईसापूर्व 500-350 ई. के मध्य का है।

नागरी लिपि

- नागरी लिपि को दो भागों में विभाजित किया जाता है।
- पूर्व क्षेत्र में प्रचलित लिपि का नाम नागरी है।
- पश्चिम क्षेत्र में प्रचलित लिपि अर्ध -नागरी अथवा पश्चिमी नागरी कहीं जाती है।
- मध्यभाग में प्रचलित लिपि देवनागरी एवं दक्षिण क्षेत्र की नागरी लिपि को नंदिनागरी कहा जाता है।
- मोदी लिपि जो मराठी भाषा को व्यक्त करती है। नंदिनागरी एवं देवनागरी के मिश्रण से उत्पन्न हुई है।

नंदिनागरी लिपि

- नंदिनागरी लिपि दक्षिण भारत में विकसित हुई, नागरी लिपि का रूप है।
- इस लिपि में तालपत्र पर कर्नाटक के पश्चिम क्षेत्रों में पांडुलिपियों प्राप्त होती है।
- इस लिपि का समय यादव –होयसल,1300 AD.
- यह लिपि मैसूर के क्षेत्रों में भी विकसित होती हुई दिखाई पड़ती है।

नेवारी लिपि

- यह लिपि नेपाली लिपी भी कही जाती है।
- संस्कृत की पांडुलिपियां इस लिपि में प्राप्त होती है।
- इस लिपि का विकास १२हवीं शताब्दी ई. में देखा जाता है।
- नेवारी लिपि तथा प्राचीन बांग्ला लिपि आदिकालिक बंगाली लिपि से उत्पन्न हुई लिपियाँ हैं। आदिकालिक बंगाली लिपि भी पूर्वीगुप्तलिपि से विकसित हुई।
- असमी लिपि, उड़िया लिपि,मैथिली,मणिपुरी,आधुनिकबंगाली लिपियाँ प्राचीन-बंगाली लिपि से उत्पन्न हुई हैं।

ग्रंथ लिपि

- आस पास के क्षेत्रों में इस लिपि का स्वरूप गोलाकार है।यह लिपि तमिलनाडु के क्षेत्र में सातवीं शताब्दी ईस्वी में विकसित हुई।
- यह लिपि तमिल लिपि के समानांतर विकसित हुई।
- इस लिपि का प्रयोग केवल संस्कृत के पांडुलिपियों के लेखन में किया जाता था।
- इस लिपि के दो प्रकार हैं-
- तंजावूर के पास प्रयुक्त होने वाली इस लिपि का स्वरूप वर्गाकार है।
- अर्काट एवं मद्रास के आस पास के क्षेत्रों में इस लिपि का स्वरूप गोलाकार है।

कन्नड़ लिपि एवं मलयालम लिपि

- दक्षिण भारत के कर्नाटक प्रान्त के कन्नड़ भाषा के लिए इसलिए भी का प्रयोग किया जाता है ।
- ग्रन्थ, नंदिनागरी एवं तेलुगू लिपियों की अपेक्षा कन्नड़ लिपि में संस्कृत की पांडुलिपियां कम प्राप्त होती हैं।
- दक्षिण भारत के केरल प्रांत के मलयालम भाषा के लिए मलयालम लिपि का प्रयोग प्राप्त होता है इस लिपि में संस्कृति के बहुत सारी पांडुलिपियाँ प्राप्त होती हैं।

तेलुगू लिपि एवं तिलगारी लिपि

- दक्षिण भारत के आँध्र प्रदेश एवं तेलंगाना राज्यों में यह लिपि तेलुगू भाषा के लिए प्रयुक्त की जाती है।
- इस लिपि का स्वरूप कन्नड़ लिपि की तरह है।
- इसे आन्ध्रलिपि भी कहा जाता है।
- तिलगारी लिपि ज़्यादातर कर्नाटक से करवार, कासरगोड तक मिश्रित रूप में प्राप्त होती है।
- यह लिपि ग्रंथ लिपि,कन्नड़ लिपि एवं मलयालम लिपि का मिश्रित रूप है।
- इस लिपि का प्रयोग तुलू भाषा के लिए किया जाता है, जो मंगलौर के क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा है।

बंगाली लिपि

- यह लिपि पूर्व बंगाल (बांग्लादेश) एवं पश्चिम बंगाल में बंगला भाषा का प्रयोग की जाती है।
- असमी लिपि इसी बंगाली लिपि का एक प्रकार है, जो असमी भाषा के लिए प्रयोग की जाती है।
- उड़िया लिपि भी इसी बंगाली लिपि का एक प्रकार है जो उड़िया भाषा के लिए प्रयोग की जाती है।
- मैथली लिपि भी बंगाली लिपि से संबंधित है।

तिब्बती लिपि एवं सिंघली लिपि

- **तिब्बती लिपि तिब्बत क्षेत्र में प्रयोग की जाती है।**
- **तिब्बती लिपि में बौद्धसाहित्य के पांडुलिपि ग्रंथ प्रचुरता में पाए जाते हैं।**
- **श्रीलंका में संस्कृत एवं बौद्ध साहित्य से सम्बंधित पांडुलिपि ग्रंथ सिंघली लिपि में प्राप्त होते हैं।**

शारदा लिपि

- कश्मीर क्षेत्र में प्रचलित के लिए भी शारदा लिपि के नाम से जानी जाती है।
- पौराणिक वांगमय तथा प्राचीन साहित्य ग्रंथों में कश्मीर को शारदा देश कहा गया है ।
- कश्मीर में सरस्वती देवी की प्रतिष्ठा सर्वोपरि है अतएव सरस्वती देवी के नाम पर इसे शारदा देश तथा ज्ञान के केंद्र के रूप में शारदा पीठ की स्थापना हुई।
- वर्तमान में शारदा पीठ अत्यंत ही जीर्णशीर्ण अवस्था में पाक अधिकृत कश्मीर के मुज़फ़्फ़राबाद जनपथ में विद्यमान् है।
- शारदा देश के लिए भी होने के कारण इसे शारदा लिपि कहा जाता है।
- संस्कृत की बहुत-सारी पांडुलिपियों के शारदा लिपि में प्राप्त होती हैं।

Miscellaneous scripts

- Sharada script, Nakri script, and Gurmukhi script or originated from the western variety of Gupta characters.
- Eastern variety of Gupta characters had two subdivisions, the western and the eastern.
- The western sub-variety developed into Siddhamatrika.
- Kaithi and Kutilalipi are developments from Siddhamatrika.

References & Recommended Readings

- Murthy,Srimannarayana,Methodology in Ideological Research, Delhi:Bharatiya Vidya Prakashan,1990.
- 2. Murthy,R.S.Shivaganesh,Introduction to Manuscriptology,Sharada Publication House,Delhi-110035,1996.
- 3.Katre,S.M.(with P.K.Gode),Introduction to Indain Textual riticism,Poona:Deccan College,1954.
- 4. Thaker,Jayant P., Manuscriptology and Text Criticism, Oriental Institute, Baroda.
- 5.Pandurangi,K.T.Wealth of Sanskrit Manuscripts in India & Abroad,Bangalore.
- 6. Buhler G, Indian Paleography, Munshiram Manoharam lal, New Delhi
- 7. Siniruddha Dash, Editior, New lights on manuscriptology, a collection of articles of Professor KV Sharma, Shri Sarada education Society research Centre Adyar Chennai 2007.

FOR

Questions
Comments
Suggestions

Contact: Dr.ANIL PRATAP GIRI

ASSOCIATE PROFESSOR

DEPARTMENT OF SANSKRIT

MAHATA GANDHI CENTRAL UNIVERSITY

Mob.7200526855

Email : anilpratapgiri@mgcub.com

THANK YOU